

सत्य साहित्य



सत्य साहित्य, श्रीरामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 9 / अंक 1, अक्टूबर 2025 • Year 9 / No. 1, October 2025

पार करो मेरा बेड़ा मचानी, पार करो मेरा बेड़ा
छोटा छोटा झंझोरा मचानी, पार करो ---

(1) गहरी नदिया नाव पुरानी
दया करो मैं ज़पटि मचानी
सबको आसरा तेरा मचानी - पार -----

(2) मैं प्रवगुणिचा गुण न कोई
मैरया जगा दो किस्मत सोई
देखियो न गुण मेरा मचानी - पार ---

(3) जग जननी तेरी जोत जगाई
तेरे दीदार की आस लगाई
हृदय करो बसेरा मचानी - पार ----

(4) मनों को मां देसा घर दो
द्वार की एक नज़र में कर दो
लूरे पाप लूरेरा मचानी - पार -----

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)



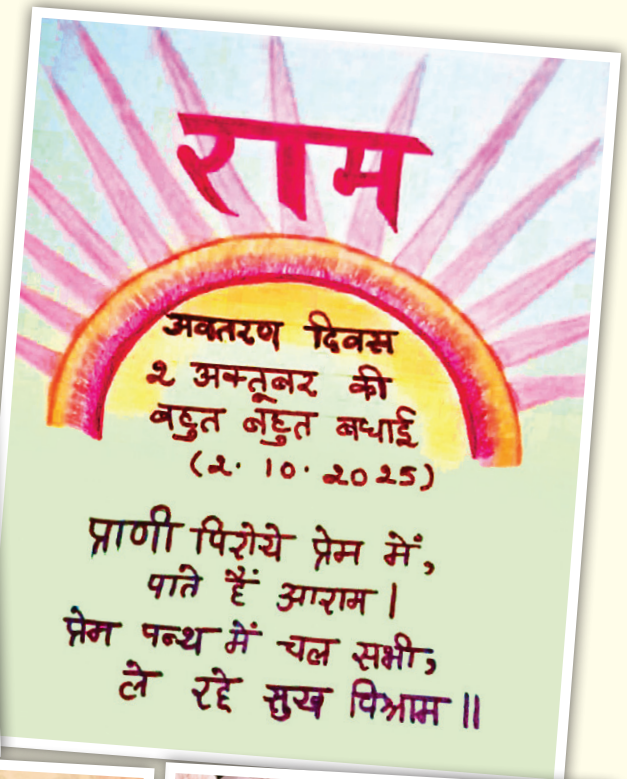
इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई
- Simran
- नाम में अटूट विश्वास
- राम नाम की महिमा
- आप बीती
- विभिन्न केन्द्रों से
- श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण - जम्मू
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

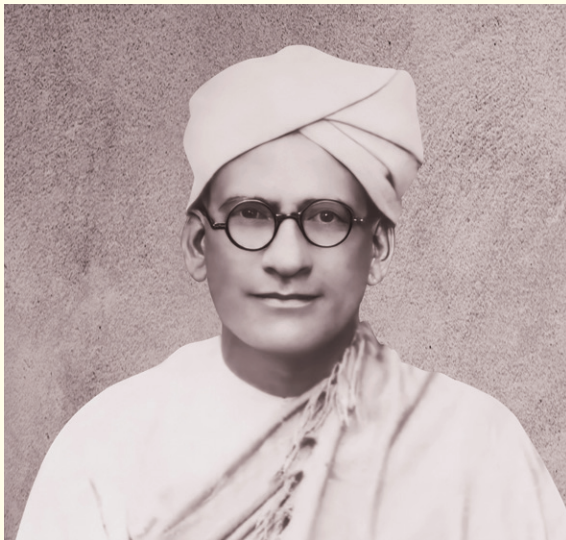
मूल्य (Price) ₹5

बधाई



SIMRAN

सत्यानन्द



Repeating the holy and purifying Name of God, either with the tongue or in the mind, is called Simran. If the auspicious Name of God is received from a realized saint, it awakens the inner self, and that Name is regarded as a captivating mantra that subdues the restless tendencies of the mind. Just as a living tree produces living fruit and seed, in the same way the Name of God, received through divine grace and from a realized saint, becomes the means of meditation, concentration, equanimity, and absorption in God.

Once, a seeker approached a venerable and accomplished devotee and respectfully said: "Revered one, my mind is very restless, my will is very weak, my resolves always fail, and doubt constantly torments me. Kindly show me some way by which these defects may be removed." Hearing this, the devotee replied: "Good man, the defects you describe are mental diseases. From evil desires, wicked

thoughts, bad conduct, and bad company, such mental afflictions arise. Because of these inner diseases, a person's mind becomes so impure, so unsteady, so timid, so weak, so doubtful, and so fatigued that firmness, concentration, and composure cannot arise in it even in the slightest measure. If you truly wish to eradicate this disease from the root, then take the great medicine of Ram Naam. By this, all your mental diseases and afflictions will be destroyed. Your mind will become pure and strong. Your will shall become strong, and your resolves shall become noble and steadfast."

The seeker, following the proper method, took to remembrance of the Name—through repetition, reflection, and meditation. In due time, all his mental defects were eliminated. His concentration became perfected. His will and power of resolve grew firm and strong. In the clear sky of his consciousness, stars of lofty thoughts began to arise spontaneously. Even in grave adversities, he remained steady like a pillar of stone. From his chosen path he never wavered. Whatever work he undertook, he succeeded in. By his patience, firmness, equanimity, serenity, extraordinary brilliance, goodwill for humanity, and wondrous mental power, he came to be regarded as a truly great man. Through meditation on the auspicious Ram Naam, he attained the state of a liberated soul while living. His inner being became perfectly pure, and shone with divine radiance.

(Shri Bhaktiprakash, pp 419-420) ■

नाम में अटूट विश्वास

प्रेम

जन्म जन्मान्तर से ऐसे संस्कार चले आते हैं, प्राणी अपने आपको देह मानता रहा है और तनिक अपमान से दुःखी हो जाता है।

एक मदालसा माँ हुई है जिसने अपने पुत्र को बताया था कि तू नित्य है, आत्मा है पर और माताएँ तो ऐसी शिक्षा ही देती हैं कि शरीर ही आत्मा है। हमें

सोचना चाहिए कि सत्संगों में आकर कितना सुधार हुआ है, क्या हममें सहनशक्ति आई या नहीं! क्या हम दूसरों से प्रेम करते हैं? द्वेष तो नहीं करते। श्री गीता जी में भगवान् कहते हैं: जो मूढमति किसी से द्वेष करता है वह मुझ से द्वेष करता है। जब तक मन में द्वेष तब तक समझना चाहिए कि अभी भक्ति नहीं आई। परमेश्वर की भक्ति आवे तो ये अवगुण नहीं रहते। लोग संत शरण लेते हैं, महाराज बड़े उदार थे। एकदा किसी की बात सुन कर कहा, कौन है जो पूर्ण है, अवगुण किस में नहीं, महाराज अपने गुण नहीं गाने देते थे, इतने महान् पुरुष होकर भी कभी अपनी स्तुति नहीं सुनी। किसी की जुरत नहीं होती थी। एक ज़मींदार ने, तुकबन्दी से महाराज की स्तुति करनी चाही। महाराज ने उसका सत्संगों में आना बंद कर दिया। महाराज बड़े महान् और उदार थे। अवगुण भरो को भी गले लगा लेते थे, दुतकारते नहीं थे।

एक लड़का जिसका पिता नहीं था कहने लगा लड़ाई में जाऊँगा, माँ दुःखी हुई। बेटे ने कहा तू राम नाम की भक्त है, क्या यहाँ जो राम तेरी रक्षा करता है वह वहाँ मेरी न करेगा। जो लोग



देवी देवताओं की पूजा करते हैं वह अविधि से मुझे पूजते हैं। माया के पीछे भटकते हैं। नाम में विश्वास अटूट होना चाहिए। 1947 की बात है महात्मा गांधी रेलगाड़ी में जा रहे थे। गांधी जी ने किसी से राम नाम की दीक्षा नहीं ली थी। बचपन में 'आया' थी। गांधी जी लिखते हैं मैं भय के कारण अकेला रोया करता

था, 'आया' ने कहा राम नाम जपा कर निर्भय हो जाएगा। एकदा अपनी पोती को कहा, रात दस बजे का समय जो झांवा भूल आई है जा कर ले आ। प्यारे लाल ने कहा प्रातः मैं ले आऊँगा। गांधी जी ने कहा लड़की जाएगी और अभी जाएगी। राम नाम जपते जाओ और ले कर आओ। रात 12 बजे लौटी। गांधी जी इंतज़ार कर रहे थे।

महाराज की कृपा से हमें सब कुछ प्राप्त है तो हम क्यों भटकते फिरें? क्यों न समझें कि राम नाम जपता हूँ राम मेरे अंग संग हैं। यह छोटी-छोटी बातें जो महाराज ने बताई हैं, मन में बसाने के लिए हैं। राम नाम का नाता जन्म-जन्मान्तरों का है। भटकेंगे तो आगे जा कर क्या जवाब देंगे? क्या मुँह दिखाएंगे? प्रार्थना की - सेवा को अपनाएँ, भटकें न। शत्रु से शत्रुता न करना बड़ी अच्छी बात है, बड़ी ऊँची बात है। सबके लिए प्रार्थना करें। किसी के लिए द्वेष न हो। दूसरे की आत्मा को भी राम नाम की ओर लगा कर जगा दें। श्री राम तेरी कृपा हो।

(परम पूजनीय श्री प्रेमजी महाराज के श्रीमुख वाक्य, साधना सत्संग हरिद्वार 29.03.72 परम पूजनीय श्री महाराज जी की डायरी से) ■

राम नाम की महिमा

१०२५।१०२५।

नामोपासना में जप, सिमरन तथा कीर्तन पाप नाश का सर्वोत्तम साधन को है। लामिका, उपांशु और मानस नामोपासना, सर्व सुख कारी है।

In the practice of Naam-upasana (worship of the Divine Name), japa (repetition of the Divine Name), simran (remembrance of the Divine Name), and kirtan (singing the glories of the Divine) have been described as the supreme means for destroying sins. Whether it is vaachik (chanting aloud), upamshu (chanting in a whisper), or maanas (chanting silently within the mind), Naam-upasana is the bestower of all happiness.



यह राम नाम की महिमा है कि शराबी, शराबी नहीं रहता। जुआरी, जुआरी नहीं रहता। बेईमान, बेईमान नहीं रहता और व्यभिचारी व्यभिचारी नहीं रहता। क्या ये परिवर्तन स्थायी होता है या यह क्षणिक है? Is it transitory or permanent change? हो सकता है कि आरंभ में ऐसा लगे कि यह परिवर्तन जो है

वह अस्थायी है, थोड़ी देर के लिए है लेकिन कभी न कभी तो ये स्थायी, चिरस्थायी बनकर रहेगा। परमानेंट होकर रहेगा। होता है, हुआ है। अभी देखने में जो आया है उनमें भी हुआ है और जो पीछे देखा जा चुका हुआ है, पढ़ा जा चुका हुआ है, सुना जा चुका हुआ है, उनमें भी हुआ है।

लखुआ नाम के एक कुख्यात डाकू थे। लखू नाम से इन्हें पुकारा जाता। छोटी-मोटी डकैती नहीं करते थे। बड़ी-बड़ी हवेलियों में जा के डाके डालते थे। बड़े-बड़े घरों को खाली कर देते थे। आज भी लखू एक बड़ी हवेली में रस्से के माध्यम से आँगन में उतर गए हैं। सर्दी के दिन हैं, लोग सर्दी से ठिठुर रहे हैं, बड़ी ठंड है। घोर अंधकार है। कहीं से आवाज नहीं आ रही है, लेकिन एक कमरे में थोड़ी खुसुर-फुसुर हो रही है। मध्य रात्रि के बाद का समय है। इस वक्त कौन जाग रहा है? द्वार की दरार से भीतर झाँका तो देखा लालटेन जल रही है। एक खाट है उसके ऊपर एक वृद्ध बैठे हुए हैं। देखने

में ऐसा लग रहा था, जैसे मरने वाले हैं। बिल्कुल सूखी काया है जैसे हड्डियाँ दिखाई दे रही हों, लेकिन चेहरा नूरी है। चेहरे पर आभा है। ये लक्खू ही मानो अपनी कथा सुना रहे हों। मेरी ही उम्र का एक लड़का बैठा है। ऐसा लगता है उस वृद्ध का पुत्र होगा। उसके पास बैठा हुआ है। चर्चा बड़ी रोचक है, इसलिए लक्खू की दृष्टि इस वक्त चोरी पर नहीं है, डकैती पर नहीं है। कान लगा कर उस चर्चा को सुन रहा है, कि वृद्ध अपने पुत्र के साथ क्या चर्चा कर रहा है? पिता कह रहे हैं, “बेटा! मौत मेरे सिर पर मंडरा रही है। 90 साल से ऊपर मेरी आयु हो गई है। यों कहिए, लगभग 100 वर्ष होने वाले हैं। मैंने तेरे लिए बेटा, दो अनमोल रत्न छुपा के रखे हुए हैं। लगभग 90 साल से मैंने छुपा के रखे हुए हैं—ये अनमोल रत्न।”

लक्खू सुनकर बड़ा प्रसन्न है। उसने मन ही मन सोचा कि मैं यही तो चुराने आया हूँ। आपने जितनी मर्जी संभाल कर रखे हों, मुझे सब पता है कि कहाँ रखे हुए हैं, क्या हिसाब—किताब है, मैं उनको चुराने के लिए ही आया हूँ। वह अति प्रसन्न हो रहा है। बाबा कह रहे हैं, बेटा, मैं थोड़ी ही देर का मेहमान हूँ, जाने वाला हूँ और जाने से पहले मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं दो अनमोल रत्न तुम्हें सौंप कर जाऊँ। मैंने इतने साल बहुत सुरक्षित रखा है उन्हें। पुत्र कहता है, “पिताश्री ! क्या मैं भी इन्हें सुरक्षित रख सकूँगा?” “अरे बेटा, ये ऐसे लाल हैं जिन्हें तिजोरी में रखने की आवश्यकता नहीं। जिन्हें चोर चुरा नहीं सकता।” लक्खू सुन रहा है सोचता है मैं देखूँगा, कैसे नहीं चोर चुरा सकता इसे। मैं कुख्यात डाकू हूँ, आप मुझे जानते नहीं। मेरा नाम लक्खू है। मैंने किसी

के घर को भरा हुआ घर नहीं रहने दिया जहाँ मैंने प्रवेश पाया। आज इसको भी खाली करके जाऊँगा। लक्खू प्रसन्न हो रहा है। पिता समझा रहे हैं, “इसे चोर चुरा नहीं सकता। डाकू छीन नहीं सकते। इसे तिजोरी में जमा करवाने की आवश्यकता नहीं है। बेटा, जैसे मैंने सुरक्षित रखा है, यदि तुम भी इन्हें सुरक्षित रख सकोगे, तुम भी यदि इन्हें संभाल के रख सकोगे, तो ये लाल तेरे जीवन को सुरक्षित रखेंगे। इससे तेरे जीवन को जो तृप्ति मिलेगी, मिलेगी ही, मेरी आत्मा को भी परमशांति मिलेगी।”

“कहिए पिताश्री! फरमाइए, क्या देना चाहते हैं?”

“बेटा, प्रथम लाल है जिसे सत्संकल्प कहा जाता है।”

“क्या करना होगा पिताश्री?”

“रोज़ सुबह उठकर एक संकल्प लेना कि आज किसी को दुःख नहीं दूँगा। आज शराब नहीं पीऊँगा। आज चोरी नहीं करूँगा। आज झूठ नहीं बोलूँगा, आज सारा दिन रसहीन भोजन खाऊँगा, स्वादु नहीं। किसी को ऐसा शब्द नहीं कहूँगा जो चुभने वाला हो इत्यादि। रोज एक सत्संकल्प लेना।”

बेटा हाथ जोड़ कहता है, “यह तो बहुत कठिन बात है, पिताश्री। सत्संकल्प लेना तो बहुत आसान है लेकिन उसे, एक दिन के लिए भी निभाना तो अति दुष्कर है। यह नहीं किया जा सकता।” पिता कहते हैं “किया जा सकता है, बेटा! डर मत, घबरा मत। किया जा सकता है इसीलिए पहला रत्न दिया है। पर तुम कर सको इसके लिए दूसरा रत्न दे रहा हूँ। सामर्थ्य चाहिए न, इसको करने के लिए। दृढ़ निश्चय होने के लिए सामर्थ्य

चाहिए। मात्र कहने से बात नहीं बनती उसे आचरण में लाना होता है। मात्र सुनने से बात नहीं चलती उसे आचरण में लाना होता है। आचरण में लाने के लिए आपको पर्याप्त बल चाहिए, बेटा! यह मैं स्वीकार करता हूँ। इसी के लिए मैं दूसरा रत्न दे रहा हूँ।”

“ठीक है, पिताश्री! यदि आप बल दे रहे हैं, शक्ति दे रहे हैं, सामर्थ्य दे रहे हैं मुझे, तो मैं सत्संकल्प जरूर लूँगा।” पिता ने मंत्र दिया, राम मंत्र दे दिया। लो बेटा, ये दूसरा अनमोल रत्न है। अन्तिम रत्न। बस। एक पहले दिया है, दूसरा रत्न यह है। इसके बाद मेरे पास और कोई देने योग्य पूँजी नहीं है। राम—राम जपते रहना। पिता ने मंत्र दीक्षा दे दी।

लक्खू कान लगा कर सब कुछ सुन रहा है और देख रहा है। लक्खू सोच रहा है कि ये क्या रत्न दिए हैं इसने। लेकिन वह भी सुन-सुन के, देख-देख के प्रभावित हो रहा है। मन ही मन सोच रहा है कि ये जाने वाला है, काश! मैं भी भीतर घुस गया होता तो मैंने भी ये रत्न इनसे ले लिए होते। कोई बात नहीं। जिस एकाग्रता से लक्खू ने सब कुछ सुना है, यूँ कहिएगा कि वह भी अपने आपमें अपने ढंग से मंत्र दीक्षित हो गया है।

पिता आगे बता रहा है, “कैसे जपना है बेटा, यह विधि भी सुन लो। थोड़े ही मिनटों का मेहमान हूँ। उत्तर की दिशा में या पूर्व की दिशा में मुँह कर के बैठ जाना। सीधे होकर बैठना, आँख बंद करके ये भ्रूमध्य स्थान को देखना। क्या देखना यहाँ पर? सुबह जो उदय होता है सूर्य, उसके दर्शन करना और ये समझना कि मैं परमात्मा के उस ज्योतिर्मय जगदीश के दर्शन कर रहा हूँ। मन ही मन राम राम राम राम राम राम राम राम जपते रहना। जपते हुए ये भी ध्यान रखना कि इस

मंत्र का अर्थ क्या है? परमात्मा का, जिसका ध्यान लगा रहे हो, उसके गुण क्या हैं। वह कृपा का सागर भी है, करुणानिधि भी है। ये सब चीजें याद करते रहना। ऐसे करते-करते छह महीने के अंदर ही तुझे परमानंद की प्राप्ति हो जाएगी। सत्संकल्प और उसके साथ-साथ इस मंत्र का आराधन जिस विधि से इस वृद्ध ने बताया है, हमारी दीक्षा विधि इससे भिन्न नहीं है। बिल्कुल यही है।

भक्तिप्रकाश में पढ़ कर देखें तो स्वामीजी महाराज ने बिल्कुल इसी प्रकार की विधि लिखी हुई है। भक्तिप्रकाश में पढ़िएगा। यह सब चीज़ बड़ी स्पष्ट कही हुई है। हमने इन छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया, नहीं पढ़ा तो पढ़िएगा। कथाप्रकाश में लिखा हुआ है पढ़ लीजिएगा। छह महीने के अंदर-अंदर बेटा तुम्हें परमानंद की प्राप्ति हो जाएगी। ये कहते लक्खू क्या देखता है? वाणी बंद हो गई। आँखों से प्रकाश की किरणें निकली हैं। सारे कमरे को प्रकाशमय करके, ज्योतिर्मय करके, तो उस चिदाकाश में लीन हो गई है—ज्योति। ये दृश्य लक्खू भूल नहीं पा रहा है। मैंने अभी तक कभी किसी की मृत्यु होती नहीं देखी। ये किस प्रकार की मृत्यु है? आँखों से कोई चमकती चीज़ निकली है, किरणें निकली हैं। जिसने सारे कमरे को, प्रकाशित किया है वह छोटा-सा कमरा प्रकाश ही प्रकाश में बदल गया है। आज कुछ नहीं लूटूँगा। लक्खू आज कुछ लूटने के लिए तैयार नहीं। आज मैंने वास्तविक लूट लूटी है, खाली हाथ घर से निकल गया है। बचता-बचाता हुआ मन ही मन कुछ न कुछ चर्चा चल रही है। बहुत आनन्दित है आज। एक अद्भुत सी मस्ती है लक्खू के ऊपर। आज उसकी डाकू जैसी चाल नहीं रही। परमेश्वर जब, कृपा करने पर

आता है, तो उसकी कृपा छोटी-मोटी नहीं होती है। वह कृपा बहुत करता है। लक्खू पर आज कृपा हो गई। द्वार खटखटाया। पत्नी ने खाली हाथ देखा तो, बड़ी निराश हुई। आज पहली बार खाली हाथ आया है। क्या करूँगी? अरे, आज मैं बहुत अनमोल धरोहर लाया हूँ तेरे लिए। तुझे भी मैं उसमें भागी बनवाऊँगा। अपने घर में साधना के लिए एक कक्ष बना लिया है। दोनों साधनारत हो गए। अति प्रसन्न। प्रगाढ़ आस्था। नास्तिक संभवतया पहले भी नहीं होगा पर इस वक्त आस्था ऊपर की ओर shoot कर गई है। प्रगाढ़ आस्था, नियत समय, नियत स्थान—साधनारत। लक्खू की

आत्मा कुछ ही समय में परमात्मा बन गई। लक्खू के ऊपर स्थायी प्रभाव पड़ गया।

आप सबसे करबद्ध प्रार्थना है। नाम की उपासना दत्तचित्त होकर कीजिएगा। जो पिछली विधि बताई है, वही हमारे गुरुजनों ने भी बताई हुई है। आप देखें श्री अधिष्ठानजी को, क्या जो वृद्ध ने बताया है, वह इससे कुछ भिन्न है? नहीं। सब कुछ यही है। कमी इतनी ही है कि हमने ऐसा किया नहीं जैसा लक्खू ने करके दिखाया। इसीलिए दुःखी हैं, अशांत हैं, व्याकुल हैं, चिंतित हैं। लक्खू अब डाकू नहीं रहा। धर्मात्मा बन गया है। परमात्मा का अंश।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन 11.03.2001) ■

आप बीती

A Call from the heart

It was in 1977 when I came in contact with Shree Ram Sharnam. After regularly attending satsangs in Delhi, I had the privilege to take Deeksha from Shri Prem ji Maharaj.

Just after a few months I was transferred to Hyderabad. But before going I was fortunate to attend the Haridwar Sadhna Satsang.

During my stay at Haridwar, I came in contact with Dr. Saab (Maharaj ji). As we were room mates, we came to know a lot about each other. He would request me to take his lunch/dinner plate along with me and put it in the room and he would have his meal later when he was free from his duties at the end of the baithaks.

After the Sadhna Satsang we both stayed in contact with each other by the means of letters. I have received a few letters from him which I have saved as my personal treasure. Then gradually we lost touch and there was a

silence of 10 years.

In 2002, I was in Delhi enroute to Vaishno Devi. I came across Shree Ram Sharnam. I appraised my wife of my association with Shree Ram Sharnam during my posting in Delhi earlier.

Within four or five days of our return to Hyderabad, simply out of the blue, I received a letter from Dr. Saab (Maharaj ji), which said “....dear, it is more than a decade or so since we met each other. Do you have any plans to visit Delhi in the near future, please make it convenient to meet me.” You can only imagine my utmost astonishment!

I immediately wrote back to him and we arranged a plan to meet in Delhi. My meeting with him was truly unforgettable.

With this incident I learned that, when you remember your Guru with utter faith and devotion, He will bless you! Jai Jai Ram. ■

साधना की प्रेरणा

हमारे शहर में साप्ताहिक सत्संग होता है, पर दो-तीन महीनों से मैं लगातार जा ही नहीं पा रही थी। अपनी दुकान पर बैठकर मैं अमृतवाणी का पाठ और जाप तो नित्य करती थी पर अंदर से ध्यान नहीं लग रहा था। फिर एक दिन रोज़ की तरह मैं अपनी दुकान पर बैठी थी कि अचानक पूजनीय महाराज जी मुस्कुराते, खिलखिलाते मेरी दुकान में आये और काउंटर के अंदर आकर मेरे पास खड़े हो गए और मुझसे बोले क्या हो गया, बहुत दिन हो गए आप आए नहीं। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि गुरुदेव मेरी दुकान में ऐसे अचानक! और फिर महाराज श्री को मेरी दुविधा के बारे में कैसे पता चला। महाराज श्री को साक्षात् पाकर मैंने उनसे अपनी मन की अन्य बातें भी कह दीं। फिर महाराज जी मुस्कुराते हुए दुकान से चले गए। अगले रविवार को, सुबह होते ही मैं बेचैन हो गयी और अपनी हाज़री लगाने बाबा के दरबार पहुँच गयी। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि गुरुदेव मुझे साधना के लिए प्रेरित करने ही आए थे। सो मैंने भी निश्चय कर लिया कि हर रविवार सत्संग में जरूर पहुँचना है। धन्य हैं हम ऐसे सत्गुरु पाकर जो समय-समय पर हमारा मार्ग दर्शन करते हैं।

जय जय राम। ■



श्री अयोध्या धाम में नाम भगवान अवतरित हुए

मुझे इजाजत ही नहीं मिली पूरा कार्यक्रम अटेंड करने की। मुझे तो हाज़री लगाने बुलाया गया और निकाल दिया गया। मेरे जैसे के साथ ऐसा ही होना चाहिए।

Private नौकरी में ज्यादा छुट्टी नहीं मिलती। मुश्किल से रविवार के कुछ घंटे ही इस आनन्दित स्वर्ग में रह पाने का अवसर चुरा पाया। इसलिए उनको यह मीठा उलाहना तो बनता है। उनसे नहीं कहूँगा तो और किससे कहूँगा?

तीसरे दिन की अद्भुत तरंगें तन-मन को छूती हुई भेद रहीं थीं। पूज्य त्रिमूर्ति गुरुजन तो मानो पूरे समय पुलकित ही दिखते रहे। शायद इसलिए भी कि जैसे राम लला की इतने वर्षों के बाद उनके जन्म स्थान में स्थापना हुई, वैसे ही हमारे प्यारे गुरुजन भी निश्चित ही इस दिन की प्रतीक्षा कर रहे होंगे कि मूर्तिमय भगवान् तो विराजमान हो गए अब नाम भगवान् श्री अमृतवाणी जी के पाठ के माध्यम से उस क्षेत्र पर गूँजें।

इसी धरा पर राजा दशरथ जी ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया, राम जी को धरा पर लाने के लिए। उसी धरा पर परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज जी ने नाम भगवान् को अवतरित किया उनके दिव्य ग्रन्थ श्री अमृतवाणी जी के अखण्ड पाठ के रूप में। यह सब सोच-सोच के शरीर में रोमांच हो रहा है। आनंद ही आनंद बरसा मेरे बाबा के दरबार में। ■

राम महिमा, गुरु महिमा

मेरा परिवार बहुत सालों से श्री रामशरणम् से जुड़ा हुआ है। यह रास्ता हमें हमारी माँ ने दिखाया था। 14 फरवरी 2025 को मेरी माँ के पेट में कुछ दर्द उठा और उन्हें दस्त भी लग गए। डॉक्टर को दिखाया तो उसने कहा कि शायद गॉल ब्लैडर में ट्यूमर हो। उनके अनुसार अभी आसपास नहीं फैला था, इसलिए जल्दी ऑपरेशन करके निकलवाना चाहिए।

10 मार्च हो गयी थी और हमें समझ ही नहीं आ रहा था, क्या करें, कहाँ जाएं? पर गुरु की कृपा हो तो सब काम अपने आप ही बन जाते हैं। अचानक से हमें एक कैंसर हॉस्पिटल की जानकारी मिली। फिर 17 मार्च को ऑपरेशन भी हो गया जिसमें गॉल ब्लैडर को निकाल दिया गया। जब गॉल ब्लैडर की बायोप्सी हुई तो वह कैंसर के लिए नेगेटिव हो गयी! हमें तो अचम्भा ही हो रहा था कि कैसे गुरु महाराज ने पग-पग पर हमारा ध्यान रखा और सब काम अपने आप करवा दिए। यहाँ तक कि जो खर्चा होना था ऑपरेशन का, वो भी छोटा ऑपरेशन होने के नाते काफी कम हो गया था। मेरा मन कर रहा था कि मैं श्रीरामशरणम् भाग कर जाऊँ और प्रभु का और गुरुजनों का धन्यवाद करूँ। मैं उनका जितना भी धन्यवाद करूँ कम है! ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम (जून 2025 से सितम्बर 2025)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **लाहौल**, हिमाचल प्रदेश में 23 से 24 जून तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **होशियारपुर**, पंजाब में 29 जून को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 275 साधक सम्मिलित हुए और 45 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **हरिद्वार** में 5 जुलाई से 10 जुलाई तक गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा। 5 जुलाई को 14 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में जुलाई से सितम्बर तक 224 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हथीन**, पलवल, हरियाणा 13 जुलाई को विशेष

अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 198 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **जंडियाला गुरु**, पंजाब में 3 अगस्त को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 300 साधक सम्मिलित हुए।
- **रोहतक**, हरियाणा में 9 से 10 अगस्त तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **चण्डीगढ़** में 24 अगस्त को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 28 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **श्री अयोध्या धाम**, उत्तर प्रदेश में 29 अगस्त से 1 सितम्बर तक श्री राम मंदिर प्रांगण के सामने बिरला धर्मशाला सभागार में श्री अमृतवाणी जी की 108 आवृत्तियों का संगीतमय अखण्ड पाठ हुआ जिसमें भारत के अनेक प्रान्तों के साधक सम्मिलित हुए।
- **रेवाड़ी**, हरियाणा में 5 से 6 सितम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।

- **औबेदुल्लागंज**, मध्य प्रदेश में 7 सितम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 198 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जालंधर**, पंजाब में 21 सितम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा।
- **हरिद्वार** में 23 सितम्बर से 2 अक्तूबर तक नौ रात्रि का रामायणी साधना सत्संग होगा।

श्री अयोध्या धाम में श्री अमृतवाणी जी की 108 आवृत्तियों का अखण्ड पाठ – संक्षिप्त विवरण

29 अगस्त से 1 सितम्बर 2025 तक श्री अयोध्या धाम में श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, श्रीरामशरणम्, लाजपत नगर, नई दिल्ली के मार्गदर्शन में श्री अमृतवाणी जी की 108 आवृत्तियों के अखण्ड पाठ रूपी ज्ञान यज्ञ, सम्पन्न हुआ। यह 'नाम और नामी' का अद्भुत संगम था।

सत्संग के इस आयोजन की शुरुआत राम-नाम के अखण्ड जाप से हुई। फिर भावपूर्ण भजनों का क्रम चला और अंत में 63 घंटे तक श्री अमृतवाणी जी का 108 बार अखण्ड पाठ हुआ। तबले, ढोलक, शंख ध्वनि एवं अन्य वाद्ययंत्रों की सुमधुर संगति ने वातावरण को और भी भावविभोर कर दिया।

इस अखण्ड पाठ की अवधि में जिन साधकों ने गिन कर व्यक्तिगत पाठ किए और नोट कराए, उसके अनुसार श्री अमृतवाणी के 8000 पाठ दर्ज किए गए, जबकि कई साधकों ने अपनी गिनती दर्ज नहीं करवाई। अनुमान है कि कुल पाठों की संख्या 10,000 से भी अधिक रही होगी। चार दिवसीय इस आनंदमयी सत्संग में लगभग 2700 से 3000 साधकों ने भाग लिया।



सबसे सुंदर दृश्य तब बना जब श्री अमृतवाणी जी का अलौकिक नाद अयोध्या की गलियों में गूँजता हुआ संतों, साधुओं और अन्य तीर्थयात्रियों को भी अपनी ओर खींच लाया। जो लोग केवल दर्शन के लिए आए थे, आकर्षित होकर श्री अमृतवाणी जी का पाठ करने लगे। यह राम-नाम की चुम्बकीय शक्ति का जीवंत प्रमाण था।

इस दिव्य आयोजन की पूर्ति श्री रामलला मंदिर में बने विशाल सत्संग हॉल में बैठकर परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्दजी महाराज द्वारा रचित श्री वाल्मीकीय रामायणसार से सुन्दरकाण्ड जी के पाठ से हुई। इस अवसर पर लगभग 1500 से 2000 साधक उपस्थित थे।

अंत में, इस यज्ञ का समापन भावपूर्ण प्रार्थना के साथ हुआ 'जो कुछ भी हुआ, वह प्रभु राम और गुरुजनों की इच्छा से ही संभव हुआ।' सभी 8000 पाठ, भजन, जप और साधना को इसी भाव से अर्पित किया गया। यह राम-कृपा नहीं है तो और क्या हो सकता है? ■



श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : जम्मू

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)



परमेश्वर कृपा से श्री महाराज जी लगातार जम्मू में पधारते रहे हैं। श्रीरामशरणम् के निर्माण से पहले परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज से दीक्षित साधक श्री मोहन लाल गुप्ता जी के घर, सरवाल कॉलोनी में नियमित रूप से सत्संग चलता था। जब भी श्री महाराज जी जम्मू पधारते तो कुठियाला परिवार के यहाँ सत्संग होता था। तीन बार नाम दीक्षा का कार्यक्रम भी वहाँ आयोजित किया गया। पहला खुला सत्संग वेद मंदिर, जम्मू में 1994 में लगाया गया। तीन खुले सत्संग आर. आर. लैब में 1995, 1996 और 1997 में लगाए गए। कटरा में भी 1998 में खुला सत्संग लगाया गया।

गुरुजनों की कृपा से श्रीरामशरणम् बनाने की प्रेरणा श्री महाराज जी ने दी और कहा कि श्रीरामशरणम् के लिए ज़मीन लो और निर्माण के लिए 2-3 बार में ज़मीन ली गई। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद, उद्घाटन से कुछ दिन पहले अखंड जाप रखा गया जिसमें सभी

साधकों ने बहुत भाव-चाव से भाग लिया। श्री राम कृपा से श्रीरामशरणम् जम्मू के निर्माण से पहले सवा करोड़ का जाप हुआ। फिर वह शुभ दिन आ ही गया जिसका सबको बेसब्री से इंतजार था।

13.4.1999, मंगलवार को प्रातः 9:00 से 9:30 बजे तक हवन यज्ञ हुआ। हवन की पूर्णाहूति के बाद कन्या पूजन प्रातः 9:40 बजे श्री महाराज जी के कर कमलों द्वारा अति प्रेमपूर्वक हुआ। उसके पश्चात् प्रातः 10 बजे से 11:30 बजे तक श्री अमृतवाणी संकीर्तन, भजन व प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् दोपहर 12 बजे प्रीतिभोज हुआ।

श्रीरामशरणम् जम्मू का सत्संग हॉल 30x70 फुट का है और उसके दोनों तरफ 12x60 फुट के बरामदे हैं। परम पूजनीय श्री महाराज जी का कक्ष और प्रार्थना कक्ष भी हैं। विशेष खुले सत्संग को आयोजित करने के लिए पुरुषों और महिलाओं के रहने के लिए कमरे व बड़े-बड़े



हॉल बने हुए हैं। रसोई भी बनाई गई है। श्रीरामशरणम् जम्मू में रविवार के सत्संग में हॉल व बरामदों में लगभग 800 साधकों के बैठने का स्थान है और बाहर भी कुर्सियों पर लगभग 150 साधक बैठ सकते हैं।

सन् 1999 में उद्घाटन के बाद भी 40-40 दिन के अखण्ड जाप हुए। सन् 2000 में 15 दिन का, अखण्ड जोत के साथ जाप हुआ। 2002 में सवा करोड़ जाप की प्रेरणा दिल्ली श्रीरामशरणम् से हुई जिसका आयोजन गुरुजनों की कृपा से हुआ और यह जाप 7 करोड़ की संख्या तक हुआ।

श्रीरामशरणम् जम्मू में 1.9.2004 बुद्धवार को विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें अखण्ड जाप की पूर्ति के बाद श्री महाराज के कर कमलों द्वारा श्रीरामशरणम् के द्वार पर नाम पट्टिका लगाई गई। उसके पश्चात् श्री अमृतवाणी संकीर्तन, भजन व प्रवचन हुआ।

यहाँ हर वर्ष तीन दिवसीय खुले सत्संग का भी आयोजन होता है। जिसमें देश विदेश के लगभग 700 साधक भाव-चाव से भाग लेते हैं। श्रीरामशरणम् में गुरुजनों के द्वारा बनाए नियमों के अनुसार सारा आयोजन होता है। श्री अमृतवाणी संकीर्तन सभी को प्रभावित करता है। लोगों की रुचि दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। श्रीरामशरणम् के प्रांगण में चारों ओर फूलों के पौधे लगाए गए जो अपनी विशेष आभा बिखेरते हैं। इस अद्भुत आध्यात्मिक वातावरण

में साधक माला लेकर जाप करते हुए आनंदित होते हैं। सभी साधकों का अनुभव है कि हमारे गुरुजन सूक्ष्म रूप में समय-समय पर हमारा मार्गदर्शन करते हैं। यह उन्हीं का प्रताप है कि सभी कार्यक्रम सुचारु रूप से चल रहे हैं।

परम पूजनीय श्री महाराज जी के निर्देश व प्रेरणा से प्रचार के लिए सत्संग प्रतिदिन जम्मू के विभिन्न स्थानों पर किए जाते रहे हैं। किशतवार, पुंज, साम्बा, भद्रवाह, आर.एस. पुरा, हीरानगर व कठुआ आदि क्षेत्रों में भी प्रचार सत्संग होते रहे हैं। इन आयोजनों से श्री महाराज जी अति प्रसन्न होते। यह कार्यक्रम कोरोना के आने से पहले तक नियमित रूप से होता रहा है।

गुरुजनों की असीम कृपा से श्रीरामशरणम् में सुचारु रूप से दैनिक सत्संग होता है, साधक दूर-दूर से आते हैं। जिसमें लगभग 35-40 साधक होते हैं तथा रविवार को श्री अमृतवाणी सत्संग नियमित रूप से चल रहा है इनमें करीब 700-800 साधक सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक माह पूर्णिमा, 2 तारीख, 13 तारीख, 29 तारीख का जाप होता है। अप्रैल से सितम्बर और अक्टूबर से मार्च में समय का परिवर्तन होता है।

इसके अतिरिक्त तीनों गुरुजनों के अवतरण दिवस व निर्वाण दिवस और गुरु पूर्णिमा के विशेष कार्यक्रम भी होते हैं जिसमें पुष्पांजलि, श्री अमृतवाणी पाठ, भजन, श्री सुन्दरकाण्ड पाठ और जाप का आयोजन होता है। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में एक माह पूर्व से श्री गीता जी का पाठ होता है। विजयदशमी के उपलक्ष्य में एक माह तक श्री रामायण जी का पाठ होता है। नव वर्ष पर 31 दिसम्बर को श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ होता है जिसकी पूर्ति 1 जनवरी को होती है।

अंत में हम सब साधकों की यही प्रार्थना है कि हम गुरुजनों के बताए मार्ग पर निष्ठापूर्वक चल सकें और परम पिता परमात्मा एवं गुरुजनों की कृपा हम सब पर सदैव बनी रहे। ■

Sadhna Satsang (October 2025 to March 2026)

Haridwar Ramayani	23 September to 2 October	Tuesday to Next Thursday
Haridwar	11 to 14 November	Tuesday to Friday
Kapurthala (Fazalpur)	21 to 24 November	Friday to Monday
Indore	2 to 5 January	Friday to Monday
Hansi	6 to 9 February	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Friday to Monday
Haridwar	29 March to 3 April	Sunday to Friday

Naam Deeksha in Other Centres (October 2025 to March 2026)

Pathankot	5 October	Sunday
Hiranagar	7 October	Tuesday
Amritsar	12 October	Sunday
Gurdaspur	26 October	Sunday
Jammu	2 November	Sunday
Sujanpur	9 November	Sunday
Gwalior	16 November	Sunday
Kapurthala (Fazalpur)	23 November	Sunday
Melbourne (Australia)	7 December	Sunday
Kathua	7 December	Sunday
Bhiwani	13 December	Saturday
Ujjain	14 December	Sunday 2.00 PM
Nagod	14 December	Sunday 4.00 PM
Alampur	23 December	Tuesday
Surat	28 December	Sunday
Indore	4 January	Sunday
Kalyanpura (M.P.)	7 January	Wednesday
Bolasa (M.P.)	8 January	Thursday
Dahod (Gujrat)	9 January	Friday
Alirajpur	10 January	Saturday
Jhabua	11 January	Sunday
Pune	17 January	Saturday
Pilibanga	18 January	Sunday
Rohtak	25 January	Sunday 4.00 PM
Faridabad	26 January	Monday 4.00 PM
Bikaner	1 February	Sunday 4.00 PM
Hansi	8 February	Sunday
Mumbai	15 February	Sunday
Ramtirth (M.P.)	19 February	Thursday
Bilaspur (H.P.)	22 February	Sunday
Batala	28 February	Saturday
Amarpatan	1 March	Sunday
Ratangarh	7 March	Saturday
Kapurthala (Fazalpur)	22 March	Sunday
Narot Mehra	26 March	Thursday

Open Satsang (October 2025 to March 2026)

Pathankot	4 to 5 October	Saturday to Sunday
Amritsar	12 October	Sunday
Gurdaspur	24 to 26 October	Friday to Sunday
Jammu	31 October to 2 November	Friday to Sunday
Sujanpur	7 to 9 November	Friday to Sunday
Gwalior	15 to 16 November	Saturday to Sunday
Melbourne (Australia)	5 to 7 December	Friday to Sunday
Kathua (J & K)	7 December	Sunday
Bhiwani	12 to 13 December	Friday to Saturday
Alampur	21 to 23 December	Sunday to Tuesday
Surat	27 to 28 December	Saturday to Sunday
Jhabua	11 to 13 January	Sunday to Tuesday
Pune	17 January	Saturday
Pilibanga	18 to 19 January	Sunday to Monday
Banmore	22 January	Thursday
Bikaner	31 January & 1 February	Saturday & Sunday
Mumbai	14 to 15 February	Saturday & Sunday
Bilaspur	20 to 22 February	Friday To Sunday
Batala	28 February	Saturday
Amarpatan	1 March	Sunday
Delhi - Holi Satsang	2 to 4 March	Monday to Wednesday
Ratangarh	7 to 8 March	Saturday & Sunday
Kapurthala (Fazalpur)	21 to 22 March	Saturday & Sunday
Narot Mehra	26 March	Thursday

Naam Deeksha In Shree Ramsharnam Delhi (October 2025 to March 2026)

October	19	Sunday 10.30 AM
November	30	Sunday 11.00 AM
December	14	Sunday 11.00 AM
January	25	Sunday 11.00 AM
March	29	Sunday 11.00 AM

Purnima (October 2025 to March 2026)

October 2025	7	Tuesday
November 2025	5	Wednesday
December 2025	4	Thursday
January 2026	3	Saturday
February 2026	1	Sunday
March 2026	3	Tuesday

Letting Go of Unpleasant Emotions

In our everyday life, we often go through challenging/unpleasant situations which may be affecting our peace of mind. Knowingly or unknowingly it creates unpleasant emotions in us.

A misunderstanding with a friend may create anger in us, a family member not listening to us may create irritation in us, or perhaps unkind words spoken by others towards us may create resentment in us towards them. All these unpleasant emotions create uneasiness in us and troubles our mind, which can impact our mood and behaviour.

Activity: Circle unpleasant emotions from the words below -

Happy	Hurt	Sad	Angry	Excited	Loved
Lonely	Gloomy	Joy	Scared	Nervous	

So, how can we get rid of these unpleasant emotions and maintain our peace of mind?

Following are a few tips to help us let go of these unpleasant emotions and thoughts.

1. Understand that emotions are like visitors/guests. They come for a while and they go. Unpleasant emotions don't last forever, they come to teach us something, and then they go away. So don't get too upset when they pay you a visit.
2. You have a choice in how you respond to unpleasant emotions. Instead of feeling angry or getting upset over something - take a pause, take 3 deep breaths, and chant RAM for a minute or two in your mind. Talk to RAM and ask for his blessings to make this feeling go away and to help you stay calm and peaceful in that situation.

3. Force yourself to create a positive thought in your mind.

Example -

"I am kind and loving, their words don't decide who I am"

"RAM is with me, I can handle this calmly"

"I am in control of my emotions, and I am silently winning"

4. Give yourself a big pat on the back. Instead of reacting to an unpleasant situation, you chose to stay calm and kind. Overtime you will notice that you have become powerful, because you stop allowing external situations to disturb your peace of mind.
5. Talk to a responsible adult like your parents or a teacher to help you if someone is continuously being unkind towards you. It's a good idea to talk to them, if you are unsure of what to do. ■



प्रत्येक दीक्षित साधक का यह कर्तव्य है कि वह सत्य साहित्य पत्रिका खरीदे और उसे संग्रहीत करके अपने पास सुरक्षित रखे ताकि समय-समय पर उसका स्वाध्याय, चिंतन, मनन किया जा सके।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर-IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com

E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com

वेबसाइट: www.shreeramsharnam.org